ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 03 कुल पृष्ठ-8 14 से 20 अप्रैल, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 चै.शु.-13

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार का वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही भारत विश्व गुरु बन सकता है

– स्वामी आर्यवेश

वर्तमान परिस्थितियों में गुरुकुलों की स्थापना आवश्यक है – स्वामी प्रणवानन्द

गुरुकुलों के संरक्षण एवं पोषण के लिए कदापि पीछे नहीं हटेंगे – स्वामी यतीश्वरानन्द

नवीन शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल शिक्षा का समावेश किया जाये – सोमेन्द्र तोमर

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार की अमृत वाटिका यज्ञशाला में चतुर्वेद शतक यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ वार्षिक समारोह दिनांक 11 अप्रैल, 2022 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रो. मनुदेव बन्धु के ब्रह्मत्व में गुरुकुलीय परम्परा के सतत उन्नयन के लिए आयोजित यज्ञ में विशिष्ट अतिथियों और याज्ञिक जनों ने आहुतियाँ प्रदान की। प्रो. मनुदेव बन्धु ने अपने सम्बोधन में गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग को नमन करते हुए गुरुकुल के इतिहास पर प्रकाश डाला।

यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण कर समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। ध्वजारोहण के पश्चात् अपने संक्षिप्त सम्बोधन में सभा प्रधान जी ने ओ३म् ध्वज को मानव मात्र का प्रेरणा स्रोत बताया। उन्होंने कहा कि एक ईश्वर और उसके द्वारा बनाई गई सृष्टि में समस्त मनुष्यों को एक परिवार का सदस्य समझते हुए वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को चरितार्थ करने की आवश्यकता है। ओ३म् ध्वज साम्प्रदायिक नहीं बल्कि सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा का ध्वज है। अतः यह पूरे विश्व को समान भाव से प्रेरणा देने वाला है। आओ! हम सब पूरे विश्व को एक परिवार बनाने के लिए आगे बढ़ें और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य को प्राप्त करें। ध्वजारोहण के उपरान्त समारोह का कार्यक्रम विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ।

दर्जनों गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष, तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुए इस समारोह को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, उत्तराखण्ड राज्य के पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी, उत्तर प्रदेश की सरकार में स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री श्री सोमेन्द्र तोमर (मेरठ), आर्य विद्या सभा हरिद्वार के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य विद्यासभा के मंत्री डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार, आर्य विद्यासभा के उपमंत्री युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश, आर्य विद्यासभा के कोषाध्यक्ष श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य विद्यासभा के वरिष्ठ सदस्य आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आर्य विद्या सभा के सदस्य श्री जय सिंह ठेकेदार, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री मानपाल सिंह राठी, आर्य भजनोपदेशक श्री योगेश आर्य (बिजनौर) आदि ने सम्बोधित किया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है। क्योंकि केवल शिक्षित होने मात्र से बच्चे का पूर्ण विकास नहीं हो पाता, उसका सर्वांगीण विकास शिक्षा के साथ संस्कार देने से ही सम्भव है जो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। उन्होंने कहा कि भारत गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अनिवार्य रूप से लागू करके ही विश्व गुरु का स्थान प्राप्त कर सकता है।

स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने उद्बोधन में घोषणा की कि गुरुकुलों के संरक्षण एवं पोषण में यदि उन्हें सर्वस्व न्यौछावर करना पड़े तो वे कदापि पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड सरकार की ओर गुरुकुल के लिए हर प्रकार का सहयोग दिलवाने के लिए वे बचनबद्ध हैं।

मेरठ से पधारे उत्तराखण्ड सरकार में स्वतंत्र प्रभार प्राप्त ऊर्जा राज्यमंत्री श्री सोमेन्द्र तोमर ने इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को समाविष्ट किया जाये।

आर्य विद्या सभा के उपप्रधान स्वामी रामवेश जी ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान एवं त्याग को स्मरण करते हुए कहा कि आज स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारों को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है।

तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा समारोह में उपस्थित युवाओं का आह्वान करते हुए प्रेरित किया कि वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करने के लिए तप और त्याग का रास्ता अपनायें। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया तथा जलियावालां बाग के जघन्य काण्ड के पश्चात् जन–मानस में व्याप्त खौप व भय को मिटाने के लिए अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का दायित्व अपने ऊपर लेकर ऐतिहासिक कार्य करके दिखाया। उनके जीवन से आज के नवयुवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने आर्य समाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से अपील की कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए तन–मन–धन से सहयोग करें। उन्होंने कहा कि गुरुकुल बचेंगे तो संस्कृत बचेगी और संस्कृत बचेगी तो संस्कृति की रक्षा होगी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली वैदिक संस्कृति को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। इस षड्यन्त्र को समझने की आवश्यकता है।

श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने उद्बोधन में आह्वान किया कि यदि भारत को विश्वगुरु बनाना है तो हमें धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड पर चोट करनी होगी। जब तक समाज में अन्धविश्वास

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

13 अप्रैल पर विशेष

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए

अमर शहीदों का बलिदान

– रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह ''साईमन गो बैक'' के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुकें बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भीथे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटूकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटूकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समझ नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, ''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है''।

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, ''माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।'' उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गईं लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।'' भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- ''फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ'' मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, ''आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।'' जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, नई दिल्ली)

आवाहन आमन्त्रण

यज्ञ पुरुष हमारे पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के 81वें जन्मदिन को मनाने का

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।

स्वयं भूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वक़दाऽसि वर्षो मेदेहि। सूर्यस्यावृतम् अन्वावर्ते।

हे परमपिता परमात्मन् आप अत्यंत प्रशंसनीय हो, प्रकाशवान हो।

यज्ञो वैः पुरुषः – निश्चित रूप से मनुष्य का जीवन भी एक यज्ञ ही है। यज्ञ का भाग है, यज्ञ के लिए है।

स्वयंभूः – अपने आप होने वाले हो। हे प्रभो आप ज्ञान के दाता हो, इसलिए मुझे भी ज्ञान दो। समस्त चराचर जगत की आत्मा आप से ओत–प्रोत आपके ज्ञान से निष्णात, विद्वान लोग, सज्जन लोग जिस ज्ञान का अनुसरण करते हैं। मैं भी उसी ज्ञान को, उपदेश को स्वीकार कर उस पर चलने का प्रयास करता हूँ।

यज्ञो वैः पुरुषाः – श. ब्रा.

यह पुरूष ही यज्ञ है। प्रिय सज्जनों शतपथ ब्राह्मण के अनुसार हम लोग यज्ञोमय पुरूष महान, त्यागी, तपस्वी, परोपकार परायण, कर्मनिष्ठ, धर्मनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ हमारे पूज्य चरण ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के 81वें जन्मदिन के 3, 4, 5 मई के कार्यक्रम पर आप सभी को सादर आमन्त्रित कर रहे हैं। जिसमें पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, पं. संदीप जी मेरठ वाले आदि जैसे तपस्वी, त्यागी, ज्ञानी, ध्यानी, उच्च कोटी के याजक, संन्यासी, विद्वान, उपदेशक, भजनीक पधार रहे हैं। जिनके द्वारा प्रवाहित यज्ञ, उपदेश तथा संगीत की त्रिवेणी में मल–मल कर, नहाकर निर्मल होने के लिए तन, मन, धन के साथ आप लोग अवश्य पधारने का कष्ट करें।

कार्यक्रम

3, 4 मई 2022

यज्ञ : प्रातः–9:00 से 10:30 तक,

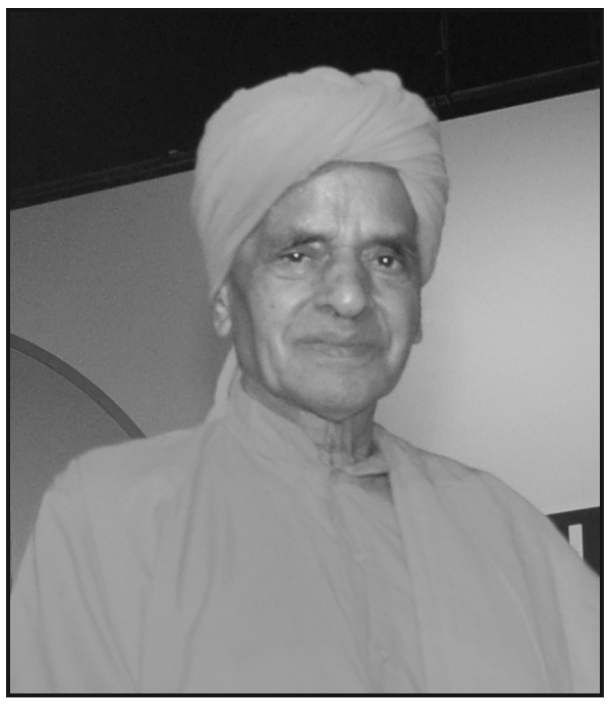

भजन : 10:30 से 11:00 तक,
उपदेश : 11:00 से 11:45 तक,
भजन : 11:45 से 1:00 तक,
भोजन : 1:00 से 2:00 तक
यज्ञ : सांय–4:30 से 5.45 तक,
भजन : 5:45 से 6 बजे तक,
उपदेश 6:00 से 6:45 तक,
भजन : 6.45 से 7:30 तक,
संन्ध्या व शांति पाठ : 7:30 से 7:45 तक

शास्त्रों का आदेश है :–

स्वाध्याये नित्य युक्त स्यात देवैचेवेह कर्मणि।
देव कर्मणि युक्तो हि विमर्तीदं चराचरम्।।

हे मनुष्यों! तुम जीवन में वेदों के स्वाध्याय अर्थात वेदों को पढ़ने, पढाने, सुनने, सुनाने में लगे रहो। यज्ञ कर्मों को करते रहो। क्योंकि जो लोग यज्ञों को करने वाले हैं, वे देव कहलाते हैं। जो देवजन नित्य यज्ञों को करते हैं वे ही चराचर इस संसार का पोषण करने वाले होते हैं। क्योंकि अग्नि में डाली गई आहुतियाँ आदित्य सूर्य को पहुँचती हैं। सूर्य से वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न होता है और अन्न से प्रजाएं, प्राणी उत्पन्न होते है। इसलिए यज्ञ कर्म बहुत महान कार्य है।

दानने पाणी नच कंकणेन हाथों की शोभा दान से ही है। इसलिए यज्ञ में आहुतियां समर्पित कर हाथों की शोभा को बढ़ाने के इस अवसर को जाने न दें। बढ़–चढ़ कर यज्ञ में भाग लेकर यज्ञ, दान व तप कर्म करने के अपने कर्तव्यों का पालन करें।

विशेष कार्यक्रम

3, 4 मई दोपहर 2.30 से 4 बजे तक विद्यालय के छात्रों का तथा सुनील शास्त्री आदि शिष्यमंडल के सदस्यों का कार्यकम।

समस्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता

1. पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

2. पूज्य स्वामी आदित्यवेश जी, निदेशक, प्रधान, गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरि.)

भजनीक – श्री संदीप आर्य जी मिल (मेरठ), सरस्वती देवी, नीतू आर्या, श्री सुनील कुमार शास्त्री, मनोज शास्त्री, संजय शास्त्री तथा कुमारी डिम्पल जी।

5 मई 2022

प्रातः 8:00 बजे से 9:00 तक यज्ञ, 9:00 से 9:30 तक भजन, 9:30 से 10:15 तक उपदेश स्वामी आर्यवेश जी, 10:15 से 10:45 बजे तक पूर्णाहुती, 10:45 से 12 बजे तक उपदेश, 12:00 से 12:30 तक भजन, 12:30 से 12:45 शांतिपाठ विद्वत् सत्कार। 1 बजे से ऋषि लंगर।

मठ का खाता न0–11149833806
बैंक का नाम – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया चम्बा हि. प्र.
IFSC - SBIN0050465
सम्पर्क सूत्र – 94180–12871, 98050–22871

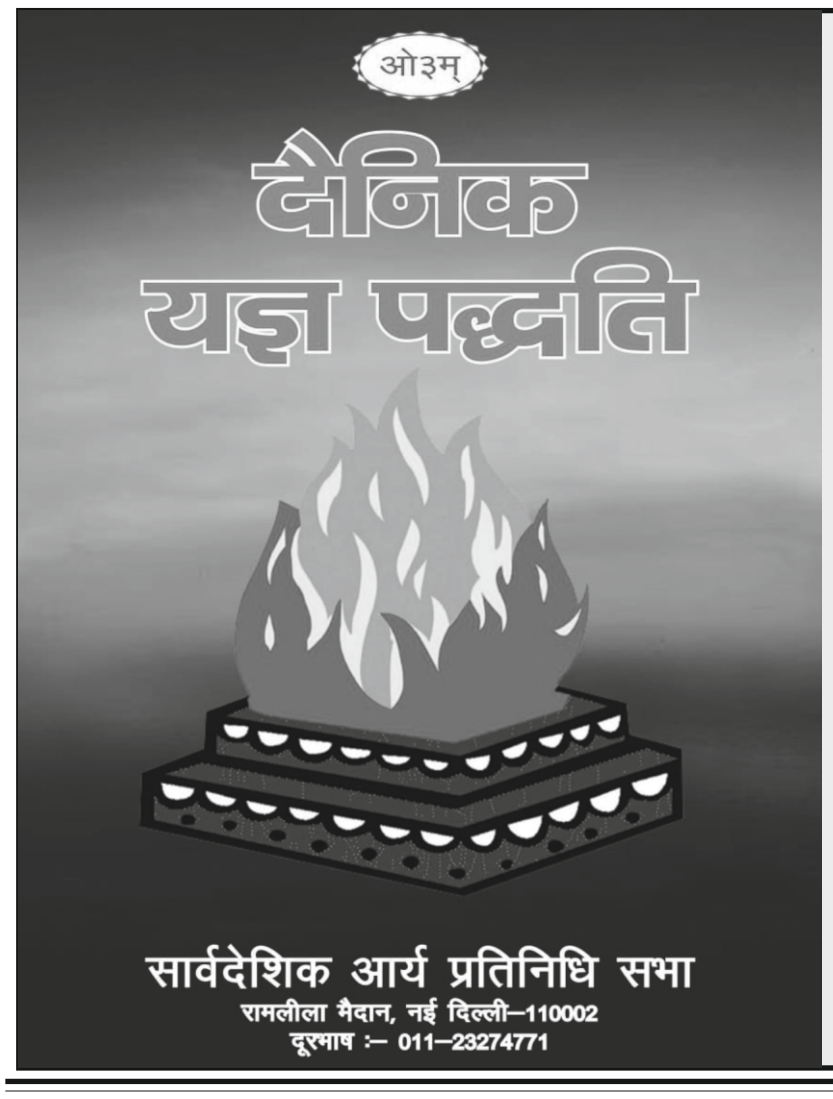

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

सोलह हजार निराश्रित बच्चों तथा चार हजार निराश्रित बच्चियों के पालन-पोषण तथा निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले दयानन्द बाल सदन के नव-निर्वाचित संरक्षक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का दयानन्द बाल सदन अजमेर में जोरदार स्वागत

गत् 30 मार्च, 2022 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अपने साथियों सर्वश्री बिरजानन्द एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री राम निवास आर्य पूर्व प्रधान हरियाणा आर्य युवक परिषद्, श्री धर्मेन्द्र आर्य कार्यकारी प्रधान आर्य समाज छपरौली, श्री अशोक वशिष्ठ सुरक्षा अधिकारी बंधुआ मुक्ति मोर्चा आदि के साथ दयानन्द बाल सदन अजमेर के प्रांगण में प्रातः 9 बजे पहुँचे, जहाँ बाल सदन के प्रबन्धक श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, मंत्री श्री विजय आर्य एवं व्यवस्थापक श्री अशोक मेघवाल आदि ने सभा प्रधान तथा अन्य अतिथियों का जोरदार स्वागत किया। उन्हें माल्यार्पण के अतिरिक्त स्मृति चिन्ह भी भेंट किये गये।

दयानन्द बाल सदन के संरक्षक चुने जाने के पश्चात् पहली बार सदन में पधारे सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके सहयोगियों ने पहले लड़कों की शाखा का निरीक्षण किया और उसके पश्चात् बालिकाओं के शाखा का निरीक्षण किया। बाद में दोनों शाखाओं के बालक-बालिकाएं एक स्थान पर एकत्रित हुए और कुमारी ललिता तथा चि. सोनू ने स्वागत गीत द्वारा अतिथियों का अभिवादन किया। सदन के प्रबन्धक श्री राजेन्द्र कुमार ने इस अवसर पर दयानन्द बाल सदन की उपलब्धियों का विवरण सुनाते हुए कहा कि अब तक इस संस्था ने 16 हजार बालकों तथा 4 हजार बालिकाओं का पालन-पोषण एवं संरक्षण करके उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। देश के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर इस संस्था के बच्चे यहाँ से निकलने के बाद सेवारत हैं। उन्होंने कहा कि स्व. श्री रासा सिंह रावत जो अजमेर से अनेक बार सांसद रहे और जिन्होंने 1987 में आर्य समाज के क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में सती प्रथा के विरुद्ध दिल्ली से देवराला तक आयोजित की गई पदयात्रा में दयानन्द बाल सदन के कार्यकर्ताओं के साथ भाग लेकर अपना विशेष योगदान दिया था। वे यहीं के छात्र थे। श्री राजेन्द्र कुमार जी ने बताया कि मैं स्वयं तथा हमारे वर्तमान प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा भी इसी बाल सदन की देन हैं। श्री राजेन्द्र कुमार ने यह भी बताया कि दयानन्द बाल सदन में देश की जानी-मानी हस्तियाँ समय-समय पर यहाँ आकर यहाँ पर रहने वाले बालक-बालिकाओं को अपना आशीर्वाद देते रहें जिनमें भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी तथा प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू तथा अनेक शीर्ष नेताओं के नाम उल्लेखनीय हैं।

बच्चों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए दयानन्द बाल सदन के संरक्षक तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज पहली बार मैं इस ऐतिहासिक संस्था में आकर अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ और मेरे समक्ष बैठे सभी बच्चों को देखकर अभिभूत हूँ कि यहाँ पर इन बच्चों के भोजन, आवास तथा अन्य सुविधाओं की कोई कमी नहीं लगती। स्वामी जी ने कहा कि बच्चों का स्वास्थ्य और उनके चेहरे का ओज और तेज यह बता रहा है कि बाल सदन की व्यवस्था अत्यन्त सुचारू रूप से की जा रही है। स्वामी जी ने बच्चों को जीवन के चर्म लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मजबूत संकल्प लेने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जो बालक दृढ़ संकल्प के साथ परिश्रम करता है और सदैव अपने लक्ष्य को सामने रखता है, वह लक्ष्य प्राप्त करने में अवश्य ही सफल होता है। अतः सभी बच्चों को अपनी पढ़ाई, अपने स्वास्थ्य और अपनी दिनचर्या में सावधानी और संयम के साथ प्रयत्न करते रहना चाहिए। स्वामी जी ने व्यवस्थापकों को भी बाल सदन की सम्पूर्ण व्यवस्था से संतुष्ट होकर साधुवाद दिया। उन्होंने बच्चों को पारितोषिक भी दिये और उनके दोपहर के विशेष भोजन के लिए आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। बाल सदन के मंत्री श्री विजय आर्य ने अन्त में सभी अतिथियों का और सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक मेजर विजय आर्य जी का हुआ सार्वजनिक अभिनन्दन

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रचारक मेजर विजय आर्य देश-विदेश में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। उनके व्यक्तित्व की विशेषता है कि समर्पित भाव से आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी के विचारों को प्रचारित-प्रसारित करने में दिन-रात लगे रहते हैं। वे एक सच्चे अर्थों में वैदिक मिशनरी हैं। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक में 13 मार्च, 2022 को अपने सुपौत्री के जन्मदिवस के अवसर पर 51 हजार रुपये की राशि नव-निर्माणाधीन यज्ञशाला हेतु दान देकर उदारता एवं दानशीलता का परिचय दिया। वे अनेक गुरुकुलों और आर्य समाजों में भी इसी प्रकार दान रहते हैं और सामाजिक गतिविधियों में भी विशेष योगदान प्रदान करते हैं। स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में जितनी भी जन-चेतना यात्राएँ निकलती हैं तथा विविध आर्य समाजिक कार्यक्रम होते हैं उनमें आप तन-मन-धन से अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। आप एक कर्मठ एवं समर्पित प्रचारक हैं। आपके उत्तम स्वास्थ्य और उज्जवल एवं दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

हालैण्ड से पधारे श्री रणजीत कुमार बदलू एवं उनका परिवार सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से भेंट करने हेतु स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरि.) पहुँचा

गत दिनांक 5 अप्रैल, 2022 को हालैण्ड से रोहतक पधारे हुए आर्य परिवार श्री रणजीत कुमार बदलू एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारा बदलू तथा उनकी सुपुत्री श्रीमती नर्गिसमा ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से भेंट की। उन्होंने दोपहर का भोजन भी आश्रम में ही किया और आश्रम को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। विदित हो कि श्री रणजीत कुमार बदलू हालैण्ड में आर्य समाज के एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आर्य महासम्मेलनों में वे सपरिवार भाग लेते रहते हैं। भारत में कई स्थानों पर भ्रमण के उपरान्त उन्होंने अपना प्रवास प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य सत्य प्रकाश आर्य के निवास पर रोहतक में किया हुआ था। उन्होंने श्री वैद्य जी से ही सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से मिलने की इच्छा व्यक्त की और समय निश्चित होने के उपरान्त वे सपरिवार टिटौली आश्रम में पहुँचे।

ज्ञातव्य है कि श्री रणजीत कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारा ने स्वामी जी को हालैण्ड आने का निमंत्रण दिया और कहा कि हालैण्ड में योग प्रशिक्षण के लिए वे या तो स्वयं आयें या अपने किसी योग प्रशिक्षक को वहाँ पर भेजें। उन्होंने यह भी बताया कि हालैण्ड में लोगों में योग सीखने की विशेष रुचि है। इस अवसर पर सभा प्रधान जी ने उन्हें आर्य परिवार सम्मान पत्र एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित कया।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक में दिनांक 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2022 को स्व. महात्मा फग्गूराम (सोनी महात्मा) की स्मृति में यज्ञ वेद प्रचार एवं सम्मान का विशेष कार्यक्रम हुआ आयोजित

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2022 को स्व. महात्मा फग्गूराम जी की स्मृति में यज्ञ वेद प्रचार एवं सम्मान का विशेष कार्यक्रम स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में आयोजित किया गया। इस पूरे कार्यक्रम के आयोजन एवं व्यय का दायित्व स्व. महात्मा फग्गूराम जी के सुयोग्य सुपुत्र सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. श्री बलराज सोनी ने उठाया। श्री बलराज सोनी वेद के उस मन्त्र को चरितार्थ कर रहे हैं जिसमें कहा गया है कि पुत्र अपने पिता के व्रतों को पूरा करने वाले हों और अपनी माता के मन को प्रसन्न करने वाले हों। पिछले लगभग 27 वर्ष से श्री बलराज जी अपने पूज्य पिता जी एवं माता जी की स्मृति में प्रतिवर्ष 31 मार्च तथा 1 अप्रैल को भिन्न–भिन्न स्थानों पर यज्ञ वेद प्रचार तथा सम्मान का कार्यक्रम आयोजित करके माता–पिता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनके जीवन से प्रेरणा लेते हैं।

विदित हो कि महात्मा फग्गूराम जी एक सच्चे समाजसेवी, गोभक्त एवं राष्ट्रप्रेमी महात्मा थे। उन्होंने जीवनभर समाज में धर्म तथा परोपकार के कार्यों के द्वारा पुण्य कमाये और जनसेवा की। दो दिवसीय कार्यक्रम में जहाँ प्रातःकाल एवं सायंकाल विशेष यज्ञ हुआ। वहीं आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव सिंह बेधड़क की भजन पार्टी द्वारा स्वामी इन्द्रवेश आश्रम टिटौली तथा क्षेत्र के प्रसिद्ध गाँव सांघी में वेद प्रचार का शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री सहदेव जी के अतिरिक्त वेद प्रचार में स्वामी मुक्तिवेश जी, श्री वेदपाल आर्य, महाशय जगवीर सिंह आदि का भी विशेष योगदान रहा। इन दोनों दिनों में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के युवा कल्याण विभाग द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का विशाल शिविर आश्रम में लगाया गया। जिसमें दोनों दिन श्री सहदेव बेधड़क तथा अन्य भजनोपदेशकों के देशभक्ति एवं प्रेरणादाई भजनों का कार्यक्रम रहा, वहीं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम आर्या तथा बहन प्रवेश आर्या के व्याख्यानों का भी कार्यक्रम रहा। विश्वविद्यालय के युवा छात्र–छात्राओं ने मन्त्रमुग्ध होकर कार्यक्रम का आनन्द उठाया और शंका–समाधान भी किये।

महात्मा फग्गूराम जी की स्मृति में श्री बलराज आर्य ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के समन्वयकों सर्वश्री डॉ. भगवान, डॉ. जितेन्द्र राठी, डॉ. रणवीर सिंह गुलिया तथा डॉ. राज कुमार को शॉल भेंटकर सम्मानित किया। शिविर में भाग लेने वाले सभी छात्र–छात्राओं को 'वेदों में क्या है' नामक ट्रैक्ट तथा बूंदी का प्रसाद भी दोनों वितरित किया गया। इसी प्रकार जिन स्त्री–पुरुषों ने यज्ञ में भाग लिया उन्हें भी प्रसाद तथा शॉल एवं अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया गया। वेद प्रचार में अपना योगदान देने के लिए ग्राम सांघी, ग्राम टिटौली तथा ग्राम खिडवाली के आर्यजनों को भी शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। वेद प्रचार में आर्य समाज सांघी के पदाधिकारी श्री शेर सिंह शास्त्री, श्री ओम प्रकाश आदि का भी विशेष योगदान रहा। ग्राम टिटौली से श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री नरेश शर्मा, श्री जिले सिंह सैनी, श्री कृष्ण प्रजापति, श्री वीरेन्द्र कुण्डू, श्री महासिंह आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य, श्री अजयपाल आर्य आदि का भी योगदान रहा। कार्यक्रम में साधिका मण्डल, टिटौली की महिला सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया और सभी ने श्री बलराज आर्य की अपने बुजुर्गों अर्थात् माता–पिता की स्मृति में ऐसे अद्भुत आयोजन करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री बलराज जी ने सारे कार्यक्रम में अपना अमूल्य समय देने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी मुक्तिवेश जी, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, श्री ऋषिराज शास्त्री, डॉ. लक्ष्मणदास आर्य आदि को भी विशेष रूप से दक्षिणा एवं उपहार देकर सम्मानित किया। दोनों दिन का कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। कार्यक्रम के दौरान सम्पूर्ण व्यय जिसमें भोजन, उपदेशकों की दक्षिणा एवं अन्य सभी व्यवस्थाओं पर हुए व्यय का भार श्री बलराज आर्य ने उठाया। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी श्री बलराज आर्य जी की प्रशस्ति करते हुए औरों को भी उनसे प्रेरणा लेने की सलाह दी।

विश्व संस्कृति में गाय का महत्व

— डॉ0 पुष्पा देवी

अनादिकाल से ही दूध देने वाले चौपायों में गाय का महत्व सर्वोपरि है और रहेगा। केवल भारत या भारतीय संस्कृति में ही नहीं वरन् भारत के अलावा अन्य सभी धर्म एवं संस्कृति में गाय का विशेष महत्व है। एक व्यक्ति से लेकर पूरे राष्ट्र एवं विश्व को पुष्ट कर हित प्रदान करने में समर्थ-गाय है। पूरी कौम की रग-रग में गाय का खून दौड़ रहा है। इसलिए भारतीय इसे गौ माता कहते हैं। माता जैसी परम पवित्र उपाधि केवल गाय को ही प्राप्त है।

गाय के सम्बन्ध में इस्लाम का दृष्टिकोण सदा से ही श्रद्धास्पद व उदार रहा है। कुरान शरीफ में स्पष्ट लिखा है कि ''बिना शक तुम्हारे लिए चौपायों से भी सीख है। उनके (गाय के) पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच से बना साफ दूध जो पीने वालों के लिए स्वाद वाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं।''

हजरत मुहम्मद साहब ने हजरत आयशा से कहा, ''गाय का दूध खूबसूरती और तन्दुरुस्ती बढ़ाने का बहुत बड़ा नुस्खा है।''

तफसीर दुर्रे-मन्सूर में कहा गया है कि ''गाय की बुजुर्गी का एहतराम किया करो क्योंकि वह तमाम चौपायों की सरदार है, तुम्हें दूध देती है।

गाय दौलत की रानी है। अच्छी तरह पाली हुई 9 गायें 16 वर्षों में न सिर्फ 450 गायें पैदा करती हैं बल्कि उनसे हजारों रुपये का दूध और फसल के लिए गोबर की अच्छी खाद भी मिलती है।

मुसलमानों को गो हत्या नहीं करना चाहिए। इमाम जाफर सादिक के कथनानुसार 'गाय का दूध हवा है, इसके मक्खन में शिफा (बन्दुरुस्ती) है और मांस में बीमारी। स्वर्गीय हकीम अजमेल खाँ के शब्दो में, ''न ही कुरआन शरीफ और न ही अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है। मौलाना फारुकी द्वारा लिखित-'खैर व बरकत' में लिखा है, ''मक्का में 'गोकशी' पर पाबन्दी लगायी थी''। बाबर, हुमायुँ, अकबर, जहांगीर, मुहम्मद शाह आलम, शाहजहाँ, औरंगजेब आदि बादशाहों तथा अब्दुल मलिक, इब्ने-मखान दूबेदार ईराकवाली हुकूमत अफगानिस्तान ने भी गाय की कुर्बानी पर पाबन्दी लगायी थी।

सौ से अधिक उलेमाए अहले सुन्नत (धर्माचार्यो) ने भी इसके पक्ष में फतवा दिया था कि (हदीस में कहा गया है) ''गौ के हत्यारे को कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। इस फतवे पर मुहम्मद शाह, गाजीशाह, शाह आलम बादशाह, सैय्यद अताउल्ला खाँ, पीर मौलवी कुतुबुद्दीन, काजी मितां, असगर हुसैन वल्द मुंशी इलाही खाँ, दरोगा आतिश खाँ, हुजूर पुरनूर आदि पाँचों बुजुर्गो के दस्तखत थे।

ब्रिटिश शासनकाल में अनेक स्वतन्त्र रियासती शासकों, नवाबों ने अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में गौ हत्या बन्द करवाई थी। जिनमें उल्लेखनीय हैं- नवाब रामपुर, नवाब मंग्लोर, नवाब दुजाना (करनाल), नवाब गुड़गाँव, नवाब मुर्शिदाबाद। भारत में गोबध का प्रश्न दुर्भाग्य से हिन्दुओं एवं मुसलमानों में मतभेद का कारण बना हुआ है। इस प्रश्न का हल खोजना आवश्यक है। जब हम इसके लिए मुसलमानों के कुरबानी के इतिहास को देखते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि यह प्रथा मुसलमानों ने हजरत इब्राहिम से ली है। हजरत इब्राहिम को ईश्वर की ओर से आदेश हुआ कि वह अपने प्यारे बेटे इस्माईल को खुदा की राह में कुरबान करें। इब्राहिम ने खुदा की खुशी के लिये अपने बेटे इस्माइल की कुरबानी करनी चाही। जब उन्होंने अपनी आखों में पट्टी बांधकर इस्माइल को जिबह (कुर्बानी) करना चाहा तो इस्माइल सुरक्षित बच गये और उनकी जगह दुम्बा (भेड़) ज़िबह हो गया।

इस्लाम धर्म की जन्मभूमि 'अरब' में हर साल असंख्य मुसलमान हज़ को जाते हैं। वहां भी दुम्बे की कुर्बानी होती है। क्या अरब में जाकर कोई हाजी गाय की कुर्बानी करता है?(हज़ के दौरान तो मक्खी,

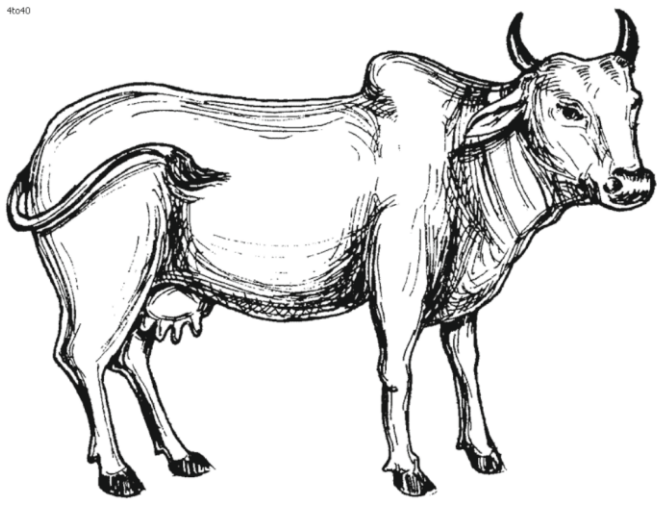

मच्छर, खटमल, जूँ तक मारना निषेध है अतः यह संदिग्ध है कि हज के दौरान वहाँ दुम्बे की बलि दी जाती है। -सम्पादक)

स्वामी निगमानन्द पतंजलि के अनुसार, अगर वहाँ ऐसा नहीं किया तो क्या इस प्रकार उन्होंने किसी धार्मिक आदेश का उल्लंघन किया?अखिल भारतीय मुस्लिम सम्मेलन (1928-29) दिल्ली में स्वर्गीय आगा खान ने अपने भाषण में कहा था कि, 'कुरान शरीफ में ही तो अल्लाह ने हमें यह भी हिदायत दी कि मत जानवारों को मारना, मत फसलों को उजाड़ना इससे संसार में बुराइयाँ फैलती हैं, अल्लाह-तआला किसी भी प्रकार की बुराई पसन्द नहीं करता। (सूरए-बकर) अर्थात् कोई भी मजहब किसी भी प्रकार की कोई बुराई पसन्द नहीं करता। भाईचारा, मेल-मुहब्बत सब चाहते हैं।

लखनऊ के प्रसिद्ध शायर पंडित बृजानारायण 'चकबस्त' ने गाय माता के विषय में अपने विचार इस तरह व्यक्त किया था-

''तू वो मखलूक है आलम में नहीं जिसका गुनाह
ली है कांलिब में तेरे रूहें - मुहब्बत ने पनाह !
साहबे-दिल, खुदा, मर्दे-खुदा कहते हैं।
दर्दमन्दों की मसीहा शुअरा कहते हैं।
'माँ' तुझे कहते हैं हिन्दू तो बजा कहते हैं।
कौन है जिसने तेरे दूध से मुँह फेरा है
आज इस कौम की रग रग में लहू तेरा है।''

भारत में हिन्दुओं का बहुमत होने के बावजूद भी गोहत्या की गति में वृद्धि जिस तीव्र गति से हो रही है उसका पता भारत सरकार के लेखपत्रों में दिये आकड़ों से चलता है। हमारे देश में प्रति मिनट लगभग 28 गायें कत्ल हो जाती हैं यानी कैलेण्डर का एक पृष्ठ पलटते-पलटते 40 हजार गायें मौत के घाट उतारी जा चुकी होती हैं। एक आकड़ें के अनुसार सन् 1981 ई0 में 30, 806 टन मांस का निर्यात भारत से हुआ था। किन्तु आज अकेले गोमांस का ही निर्यात 15, 112 टन के करीब पहुँच गया है। इस मांस में बकरी के मांस का वजन शामिल नहीं है। लगभग 18 यान्त्रिक बूचड़खाने चौबीसों घंटे धड़ल्ले से चल रहे हैं। निर्बाध रुप से चलने वाले बूचड़खानों की संख्या इसमें सम्मिलित कर ली जाय तो यह संख्या 36, 050 तक हो जाती है। सेन्ट्रल सेक्टर योजना के अनुसार नगरपालिकाओं, महापालिकाओं और अन्य अर्धस्वायत्त संस्थानों के कत्लखानों को संचालित करने हेतु शत-प्रतिशत अनुदान दिये जा रहे हैं। 'फारेन ट्रेड' नामक बुलेटिन के फरवरी 1994 ई0 में ऐसी जानकारी दी गयी थी कि इन कत्लखानों के माध्यम से भारत प्रतिवर्ष 230 करोड़ रुपयों का मांस निर्यात कर रहा है। सदी के अंत तक एक हजार करोड़ रुपये के वार्षिक निर्यात का लक्ष्य है।

यही नहीं, भारत सरकार की प्रतिवर्ष पैंतीस लाख टन गो-मांस निर्यात करने की योजना है। यदि ये योजनाएँ सफल हो गयीं तो गो-मांस के निर्यात में भारत सबसे बड़ा मांस निर्यातक बन जाएगा, जो शर्म की बात है क्योंकि भारत को गायों और गोपालकों का देश कहा जाता है।

जिस देश की अर्थव्यवस्था पशु-पालन पर निर्भर है और जिसके संविधान और धर्म में गोरक्षण की जिम्मेदारी मुख्यतः सरकार पर निर्भर है, उस देश में गो-हत्या की स्थिति यदि यही बनी रही तो आने वाले दिनों में शीघ्र ही गाय को 'दुर्लभ प्राणी' घोषित कर दिया जाय तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो.: 09415619837, 9335852901

Swami Dayanand On Upbringing of children

— GBK Hooja

Blessed is the man who has three instructors - the mother, the father and the preceptor.

It is incumbent upon the parents that before, during and after conception, they should avoid the use of intoxicants, foul smelling and other substances that are injurious to mental development and should only take things that contribtute to calmness, health, strength, wisdom and energy such as clarified butter, milk, sweets, etc., so that the generative fluids of the mother and the father be virile and free from disease.

When the baby is born, it should be bathed with pure and scented water and its natal chord cut. Then the Homa (fumigation ceremony) should be preformed with clarified butter and scents. The mother should be provided with proper victuals and bathed so that the baby and the mother both gradually gather health and strength. The husband and wife who observe these injuctions are sure to be blessed with excellent progeny, long life, and prowess and all their children also shall possess these things.

The mother should give sound instructions to the children, so that they may have refined manners and may not misuse/abuse part of their body. The parents should inculcate in their children the habit of self restraint, a love of learning and desire for good company. Pernicious games, uncalled for crying and laughing, indulging in quarrels, pleasures, moroseness, undue attachment to an object, envy, ill-will, should be shunned. When the daughter and the son attain the age of five they should be taught the Devanagri script, and foreign scripts too. Thereafter, they should be encouraged to commit to memory (with meanings) the mantras (Vedic Verses), shlokas, (couplets) sutras (aphorisms), prose and poetry bearing upon virtue, God, mother, father, preceptor, learned men, guests, king, subjects, family, kinsmen, sister, servants so that they are not misled by any miscreant. If the people are deprived of the benefits of studying the sciences of Physiology and Physics, they attribute to ghosts and evil spirits, physical and mental diseases such as delirium, fever and insanity. Instead of taking appropriate medicines adn proper care, they repose their faith in knaves, hypocrites, selfish, mean persons and fall a prey to their tricks and machinations, thus wasting money and adding to their misery. Children should be taught in their infancy the real significarnce of such fraudulent practices so that they may not fall into the clutches of such charlatans and suffer. They should also be told that their well-being lies in preserving their semen and their misery in wasting it. Children should be taught to devote exclusive attention to healthy thoughts and acquisition of learning.

At the beginning of the 9th year they should receive the upanayan (Sacred thread) and be sent to the preceptor's family.

Children grow to be learned, mannerly and well-educated if the parents are not over-indulgent and duly chastise them when necessary. They should be taught to avoid theft, lewdness, sloth, vanity, intoxicating liquors, lying, violence, cruelty, malice, ill-will and infatuation. They should speak the truth and be true to their word. Ingratitude means the negation of the appreciation of the good done by other. One should speak neither more nor less than what is necessary. One should show due respect to one's elders. The parents and the preceptor should always impart good advice to the children and pupils and should tell them that they should follow only those actions of their elders which are righteous and avoid what ever they find vicious in them. Those parents who do not educate their children properly are their enemies. Such children are disgraced in the company of the learned, just as a crow is disgraced amidst a flight of swans.

भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर
आर्य समाज एवं आर्य वीर दल के संयुक्त तत्वावधान में पुरानी सब्जी मंडी स्थित आर्य वीर दल द्वारा वीरम व्यायामशाला में राष्ट्र रक्षा यज्ञ के साथ भव्यता के साथ मनाया गया

जालोर, भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज एवं आर्य वीर दल के संयुक्त तत्वावधान में पुरानी सब्जी मंडी स्थित आर्य वीर दल वीरम व्यायामशाला में राष्ट्र रक्षा यज्ञ में आर्य वीरों, वीरांगनाओं और महिलाओं ने बड़ी संख्या में आहुतियां दी। यज्ञ के ब्रह्मा सुमेरपुर के पंडित केशवदेव शास्त्री थे। उन्होंने सभी को राष्ट्र रक्षार्थ के लिए सैकड़ों मंत्रों से आहुतियाँ दिलवाई। मुख्य यजमान आर्य समाज लालपोल के प्रधान श्री विनोद आर्य और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला खत्री थे। यजमान आर्य वीर दल महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य, व्याख्याता श्री कांतिलाल राजपुरोहित व श्री रामरख गोदारा तीनों सपत्नीक थे।

भारतीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज एवं आर्य वीर दल द्वारा प्रातः 5.30 बजे लालपोल के अन्दर स्थित आर्य वीर दल, सुभाष व्यायामशाला से ईश्वर भक्ति व देश भक्ति के जोशीले गीतों से सैकडों आर्य वीरों और वीरांगनाओं ने हाथों में ओ३म् ध्वज लिये शहर के 5 किलोमीटर में प्रभात फेरी निकाली, जो कि पुरानी सब्जी मंडी स्थित आर्य वीर दल वीरम व्यायामशाला में आर्य वीर दल अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार व आर्य समाज के प्रधान श्री दलपत सिंह आर्य के ध्वजारोहण फहराने के साथ सम्पन्न हुई।

आर्य वीर दल के महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य ने बताया कि शनिवार को भारतीय नव संवत्सर, आर्य समाज स्थापना दिवस पर प्रातः 5:30 बजे प्रभात फेरी लालपोल के अन्दर स्थित आर्य सुभाष व्यायामशाला से प्रारंभ होकर बड़ी पोल, कुम्हारों का बास, घांचियों की फलानी, तिलक द्वार, प्रताप चौक, पुरा मोहल्ला, सूरजपोल, हरिजन बस्ती, सिंधी कॉलोनी, गांधी चौक, सदर बाजार व वीरमदेव चौक होते हुए पुरानी सब्जी मंडी स्थित वीरम व्यायामशाला पहुंची। जहाँ सभी के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई थी, सभी ने मुंह मीठा किया तथा एक–दूसरे को बधाई दी।

आर्य वीर एवं वीरांगनाओं ने खिदमत के धर्म पर जो कि – 'मर जाएंगे नाम दुनियाँ में...' तथा 'अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में, है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में' नामक भक्ति गीत के साथ वैदिक धर्म की जय, भारत माता की जय इत्यादि जोशीले नारे लगाते हुए शहर के भीतर से गुजरे। जगह–जगह पर यात्रा का स्थानीय लोगों ने स्वागत किया। इस दौरान आर्य समाज लालपोल के प्रधान श्री विनोद आर्य, श्री छगन आर्य, श्री गणपत आर्य, श्री मोहनलाल भादरू, श्री भरत मेघवाल के नेतृत्व में नए बस स्टैंड पर, आर्य वीर दल संचालक श्री प्रशांत सिंह, महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य व बॉक्सिंग कोच श्री पुष्पेंद्र परमार के नेतृत्व में हरिदेव जोशी सर्कल पर दल के अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार व श्री वरुण शर्मा के नेतृत्व में अस्पताल चौराहे पर आर्य वीरों एवं वीरांगनाओं की टोली ने नागरिकों को अक्षत तिलक लगाकर व गुड़–धाणा खिलाकर नव वर्ष की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। जहां लोगों ने उनका स्वागत किया इस मौके पर बड़ी संख्या में आर्यवीर और वीरांगना जोश और खरोश के साथ उपस्थित थे।

महिलाओं के प्रशिक्षण केंद्र में बड़ी संख्या में महिला शक्ति को अक्षत तिलक लगाकर स्वागत किया तथा नववर्ष की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर आर्य वीर दल, आर्य समाज के प्रधान श्री दलपत सिंह आर्य ने संबोधित करते हुए पाश्चात्य नए वर्ष को त्यागने की अपील की तथा महिला शक्ति का सम्मान करने की बात कही।

नव संवत्सर व आर्य समाज स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए पंडित केशव देव शास्त्री जी ने कहा कि अनादि काल से यह देश आर्यावर्त था और इसमें रहने वाले समस्त लोग आर्य थे। उन्होंने कहा कि कालांतर में इस देश पर कई हमले हुए और इसका नाम अपने–अपने हिसाब से बदलते रहे। उन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए संकल्प दिलाते हुए कहा कि हमें अपने भाई चारे को बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा कि समग्र विकास में ही देश का हित निहित है। उन्होंने महिला को अबला कहने वालों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि महिलाएं अब अबला नहीं हैं। अब तक की सबसे मजबूत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी रही हैं, जो एक महिला थीं। उन्होंने नौजवानों से आह्वान किया कि वह आर्य समाज से जुड़कर राष्ट्र के निर्माण में योगदान दें।

इस अवसर पर जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड लेखा अधिकारी और उनकी टीम तथा हाल ही में तमिलनाडु में संपन्न राष्ट्रीय वुशू प्रतियोगिता के टीम मैनेजर के रूप में भाग लेने वाले आर्यवीर श्री कन्हैयालाल मिश्रा तथा राष्ट्रीय वुशू प्लेयर वंदना चौहान का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर बताया गया कि जिला स्तरीय महिला व पुरुष अंडर 23 कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन 3 अप्रैल को सायंकाल 5 बजे पुरानी मंडी सब्जी स्थित आर्य वीर दल, वीरम व्यायामशाला, जालोर में आयोजित की गई है। इच्छुक प्रतिभागी पहलवान अपनी प्रविष्टि इसी दिन दोपहर 12:00 बजे तक ही दे सकेंगे।

जिला कुश्ती संघ ओलंपिक पद्धति अध्यक्ष श्री महेंद्र मुणोत व सचिव श्री दलपत सिंह आर्य ने बताया कि कुश्ती प्रतियोगिता के फ्री स्टाइल में 57, 61, 65 ,70, 74, 79, 86, 92, 97 व 125 किलोग्राम तथा ग्रीको रोमन 55, 60, 63 ,67, 72,77, 82, 87, 97 व 130 किलोग्राम की कुश्तियाँ होगी। इसी प्रकार महिला वर्ग में महिला 50, 53, 55, 57, 59, 62, 65 68, 72 एवं 76 किलोग्राम की कुश्तियाँ आयोजित होंगी। उन्होंने बताया कि पहलवानों की आयु 1998 से 2003 में जन्मे युवा ही भाग लेंगे तथा 2004 में जन्में पहलवान मेडिकल प्रमाण पत्र लगाने के बाद ही भाग ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि खिलाड़ियों को अपना बैंक खाता, पासबुक की फोटो प्रति, आयु प्रमाण के लिए पासपोर्ट ओरिजिनल व आधार कार्ड एवं दो पासपोर्ट साइज की फोटो साथ लाना आवश्यक है। पहलवानों को वजन में 1 किलो की छूट रहेगी। उन्होंने बताया कि भारतीय कुश्ती फेडरेशन एवं राजस्थान कुश्ती संघ के आदेशानुसार आयु के लिए पहलवानों को अपना ओरिजिनल पासपोर्ट दिखाना होगा। मार्कशीट अथवा जन्म प्रमाण पत्र के आधार पर प्रतियोगिता में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।

इस अवसर पर मुख्यरूप से समाज सेवी व लेखा अधिकारी रघुनाथ खत्री, शिक्षाविद ओमप्रकाश खंडेलवाल, व्याख्याता प्रियंका शर्मा, आर्य समाज के प्रधान दलपत सिंह आर्य, आर्य वीर दल के अध्यक्ष कृष्ण कुमार, संचालक प्रशांत सिंह, शाखा नायक गणपत आर्य, संगठन मंत्री कांतिलाल आर्य, मोहन लाल भादरू, पूर्व पार्षद भरत मेघवाल, जिला क्रीड़ा परिषद् के सदस्य छगन आर्य व पूर्व पार्षद जगदीश आर्य सहित बड़ी संख्या में महिलाएं व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में सुरुचि भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में नव वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर 'आर्य समाज की चुनौतियाँ' पर गोष्ठी सम्पन्न
बढ़ता पाखण्ड, अंधविश्वास, गुरुडमवाद गंभीर प्रश्न चिन्ह हैं. –आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र
आर्य समाज ने हैदराबाद के निजाम को झुकाया था –अनिल आर्य

शनिवार 2 अप्रैल 2022, को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में नववर्ष विक्रमी संवत 2079 व 148वें आर्य समाज स्थापना दिवस पर "नववर्ष पर आर्य समाज की चुनोतियाँ" विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने 7 अप्रैल, 1875 को नवसंवत के दिन मुम्बई में की थी।

वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि किताबी शिक्षा के बाद भी समाज में बढ़ता पाखण्ड व अंधविश्वास चिंता का विषय है। लोग सत्य व तर्क की कसौटी पर निरीक्षण नहीं करते। गुरुडम बढ़ रहा है और कई गुरु जेल यात्रा भी कर रहे हैं। समाज में इन सबके प्रति जागृति लाना हर आर्य समाजी का कर्त्तव्य है, सोचने, समझने, विचार करने की दिशा व दशा बदलनी होगी। उन्होंने कहा कि सत्य, सत्य ही रहता है चाहे कोई युग काल हो वह सत्य ही रहता है। बिल्ली रास्ता काट गई व विवाह के रास्ते में यदि नदी पड़ रही है तो यह कहना कि सेहरा नदी पार करने के बाद बंधेगा ऐसी अनेक बातों को दैनिक जीवन में हम देखते हैं जो संशय व भय पैदा करती हैं और लोग शिकार होते हैं। इन बातों से हमें बचना चाहिए और समाज को भी जागरूक करना चाहिए। इसके लिए आर्य समाज को जन–जागृति अभियान चलाकर लोगों को सत्य को जानने और समझने के लिए प्रेरित करने का कार्य करना चाहिए।

मुख्य अतिथि भाजपा नेता डॉ. विकास अग्रवाल जी ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती महान चिंतक एवं समाज सुधारक थे। स्वामी दयानन्द जी ने तर्क की तलवार दी, उन्होंने कहा कि पहले सोचो फिर करो। अग्रवाल जी ने कहा कि आर्य समाज समाज सुधार आंदोलन है, आर्य समाज एक सशक्त राष्ट्रवादी विचारधारा है तथा लोगों को राष्ट्रवाद की प्रेरणा देता है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि आर्य समाज का देश के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक योगदान रहा है और आर्य समाजियों के आंदोलन के कारण हैदराबाद के निजाम ने घुटने टेक दिए थे। आज देश के सामने अनेक ज्वलन्त समस्याएँ हैं जिन पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र को संगठित करके आगे बढ़ाने में मदद मिल सके। आर्य समाज सदैव से ही राष्ट्र को सर्वोपरि रखकर कार्य करता रहा है।

कार्यक्रम अध्यक्ष श्री सोहन लाल आर्य ने आजादी की लड़ाई में आर्य समाज के क्रांतिकारी आंदोलनों की चर्चा की। राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रवीन आर्य ने नववर्ष की सभी को बधाई देते हुए अपनी संस्कृति पर गर्व करने का आह्वान किया। हापुड़ से श्री आनन्द प्रकाश आर्य ने भी नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए स्वामी दयानन्द जी को इतिहास पुरूष बताया।

इस अवसर पर श्री रविन्द्र गुप्ता, पिंकी आर्या, बिन्दु मदान, आशा आर्या, रचना वर्मा, ईश्वर देवी, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, रजनी चुघ, सुशांता अरोड़ा, विमल चड्ढा, सुमित्रा गुप्ता आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करने का संकल्प लें ब्रह्मचारी – स्वामी आदित्यवेश

गुरुकुल मानव निर्माणशाला हैं – स्वामी रामवेश

गुरुकुलों को सशक्त बनाने के लिए तन–मन–धन का योगदान दें – आचार्य प्रेमपाल शास्त्री

पाखण्ड और अन्धविश्वास को समाप्त करना हम सबकी जिम्मेदारी – श्री बिरजानन्द एडवोकेट

वेद की शिक्षाओं को घर–घर पहुँचाना होगा – ओम प्रकाश आर्य

अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होना ही शिक्षा का उद्देश्य है – डॉ. प्रकाशवीर

रहेगा हम तब तक भारत को किसी भी हालत में विश्वगुरु नहीं बना सकते। आज धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। इसके लिए आवश्यकता है कि चरित्र, ईमानदारी, सेवा, परोपकार तथा देशभक्ति के संस्कार बच्चों को प्रारम्भ से ही दिये जायें और उनके दिल में भ्रष्टाचार, बेईमानी, पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी आदि बुराईयों के विरुद्ध कूट–कूट कर विचार भर दिये जायें।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने उद्बोधन में गुरुकुल की उपादेयता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरु शिष्य परम्परा जो आज समाप्त प्राय हो चुकी है उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लागू करके दुबारा स्थापित किया जा सकता है। जब तक गुरु और शिष्य एक दूसरे के प्रति समर्पित भाव से ज्ञान देने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए कृत–संकल्प नहीं होंगे तब तक भावी पीढ़ी का निर्माण नहीं हो सकेगा। उन्होंने अधिक से अधिक गुरुकुल खोलने पर बल दिया। स्वामी जी ने संकेत किया कि जिस गुरुकुल कांगड़ी से पं. बुद्धदेव विद्यालंकार, पं. धर्मदेव विद्या मार्तण्ड, पं. विश्वनाथ, पं. प्रियव्रत वाचस्पति और डॉ. रामनाथ वेदालंकार सरीखे विद्वान् निकले हों वहाँ से आज फिर उसी स्तर के विद्वान् तैयार किये जाने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कार्यक्रम के आयोजक आर्य विद्यासभा और इसके

मुख्य अधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी को सफल आयोजन के लिए साधुवाद दिया। कार्यक्रम का प्रभावशाली संयोजन युवा विद्वान् डॉ. योगेश शास्त्री ने किया उनके अतिरिक्त डॉ. बृजेश कुमार विद्यालंकार ने यज्ञ का, श्री अशोक कुमार आर्य ने ध्वजारोहण का तथा चौ. हरपाल सिंह एवं श्री सत्यवीर सिंह और श्री योगेश शर्मा ने ऋषि लंगर का कुशलता के साथ संयोजन किया। इस पूरी व्यवस्था में गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. बृजेन्द्र शास्त्री एवं डॉ. योगेश शास्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। गुरुकुल के सहायक मुख्य अधिष्ठाता डॉ. नवनीत परमार ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में समारोह में पधारे समस्त विद्वानों, नेताओं तथा अन्य महानुभावों का स्वागत करते हुए गुरुकुल की विभिन्न उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। गुरुकुल के मुख्य अधिष्ठाता और इस पूरे आयोजन के सूत्रधार डॉ. दीनानाथ शर्मा ने अन्त में सभी आगन्तुक अतिथियों, संन्यासियों, विद्वानों तथा नेताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा जिले भर से पधारे आर्यजनों का भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने गुरुकुल के संचालन में अपने सहयोगियों को भी कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रशस्ति करके उत्साहित किया।

कार्यक्रम में कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या बहन संतोष कुमारी अपनी सहयोगी अध्यापिकाओं एवं कन्या गुरुकुल की छात्राओं के साथ पधारी हुई थीं, उनकी छात्राओं ने ऋषि गाथा गाकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। हरियाणा के नारनौल से पधारे श्री राम निवास आर्य, जयपुर से पधारे श्री देवेन्द्र त्यागी, दिल्ली से पधारे आचार्य अभयदेव शास्त्री, जीन्द से पधारे श्री रणवीर आर्य, बहन राकेश आर्या (अमृतसर) आदि भी कार्यक्रम में विशेष रूप से सम्मिलित रहे। कार्यक्रम में गुरुकुल की ओर से सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह, शॉल एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंटकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्पित स्व. श्री नाहर सिंह वर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

स्व. श्री नाहर सिंह वर्मा एक कर्त्तव्यनिष्ठ, स्पष्टवादी एवं धुन के धनी व्यक्तित्व थे – स्वामी आर्यवेश

श्री नाहर सिंह वर्मा जी आर्य समाज शालीमार बाग पूर्वी के संस्थापकों में से एक थे – डॉ. महेश विद्यालंकार

गत् 6 अप्रैल, 2022 को आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए आजीवन संघर्षरत रहे स्व. श्री नाहर सिंह वर्मा जी की श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज मंदिर पूर्वी शालीमार बाग, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, पूर्व पार्षद् ममता नागपाल, आर्य समाज के मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार अरोड़ा, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश आदि के अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजों के सदस्य एवं पदाधिकारी पारिवारिकजन तथा शोक संतप्त परिवार के शुभचिन्तक सम्मिलित हुए। आर्य समाज अशोक विहार, फेज–1 के पुरोहित पं. सतीश जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा श्रद्धांजलि समर्पित की।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा कहा कि स्व. नाहर सिंह वर्मा जी के देहावसान से न केवल परिवार की बल्कि आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री वर्मा जी राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलाने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे, केन्द्र सरकार की संसदीय राजभाषा समिति में उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत्ति के बाद भी वे इस अभियान को निरन्तर चलाते रहे। उन्होंने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्री एवं प्रान्तीय मुख्यमंत्रियों तक को समय–समय पर हिन्दी के लिए पत्र लिख करके अपने अभियान को गतिमान रखा और इसके अतिरिक्त समय–समय पर विचार गोष्ठियों एवं ज्ञापनों के द्वारा भी वे अपनी आवाज उठाते रहे। वे धुन के धनी थे और जिस कार्य को अपने हाथ में लेते थे उसे पूरा करने की ठान लेते थे। वे एक स्पष्टवादी, कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ता एवं समाजसेवी थे। जीवन के अन्तिम श्वांस तक आर्य विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का पवित्र संकल्प उनके हृदय में विराजमान रहा। आर्य समाज के विचारों से वे बचपन से ही जुड़ गये थे। मथुरा जिले में अपना बचपन बिताने के बाद वे दिल्ली चले आये और यहाँ केन्द्र सरकार में उन्होंने सर्विस की। वे अपने पीछे

भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उनकी तीन सुपुत्री (श्रीमती राजश्री, श्रीमती सुमन और श्रीमती मनोरमा) तथा एक सुपुत्र श्री सत्यव्रत जी अपने पिता के व्रतों को पूरा करने वाले हैं। श्री सत्यव्रत जी संसद में एक उच्च अधिकारी के रूप में सेवारत हैं और आर्य समाज शालीमार बाग के कोषाध्यक्ष भी हैं। उनके दिल और दिमाग में आर्य विचारों के प्रति मजबूत संस्कार हैं जो उन्हें अपने पिता के द्वारा प्राप्त हुए हैं। स्वामी जी ने कहा कि श्री वर्मा जी ने कई वर्ष तक सार्वदेशिक सभा में निःस्वार्थ भाव से सेवा की और कार्यालय प्रबन्धन में अपनी कुशलता का परिचय दिया।

वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने स्व. श्री वर्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आर्य समाज शालीमार बाग पूर्वी, दिल्ली के संस्थापकों में से श्री वर्मा जी एक थे। आर्य समाज से लोगों को जोड़ने के लिए वे घर–घर जाकर सम्पर्क करते थे। उनके हृदय में हिन्दी भाषा एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था थी। वे कर्त्तव्य पथ पर चलने वाले अथक व्यक्तित्व के धनी थे। उनके निधन से हम सभी को गहरा आघात लगा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार तथा हम सभी आर्यजनों को उनके जाने से हुए रिक्त स्थान को पूरा करने की क्षमता प्रदान करें। डॉ. महेश जी ने पारिवारिक जनों के प्रति भी अपनी सांत्वना व्यक्त की और कहा कि स्व. वर्मा जी के सुपुत्र प्रिय भाई सत्यव्रत जी पूर्व की भांति आर्य समाज के कार्यों में इसी प्रकार बढ़–चढ़कर सहयोग करते रहेंगे, ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

आर्य समाज के मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी ने विभिन्न संस्थाओं द्वारा भेजे गये शोक संदेश पढ़कर सुनाये और स्व. नाहर सिंह जी को आर्य समाज शालीमार बाग की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। परिवार की ओर से सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।